IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोविड–19, पर्यावरण प्रबन्धन एवं सुरक्षा–उत्तरी बिहार के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन

– डॉ0 अजय कुमार अतिथि षिक्षक भूगोल विभाग, जनता–कोषी कॉलेज, बिरौल, दरभंगा।

परिचय :–

कोविड–19, एक वायरस जनित महामारी है। जो मानव से मानव, पशु से पषु के सम्पर्क में आने से फैलता है। इसे दो गज की सामाजिक दूरी बनाकर हही बचाकर ही सुरक्षित किया जा सकता है। तेज खाँसी, बुखार, दर्द, श्वास लेने में कठिनाई, कोविड–19, के लक्षण हो सकते है। ऐसे में जल्द स्वस्थ्य जांच कराये। पोजेटिव होने पर ववांनटाइन सेन्टर में रहें। समुचित इलाज से कोविड–19 से स्वस्थ्य होने की संख्या 90 प्रतिषत से अधिक हो गयी है। ऐसे में शहरी जीवन से कही अच्छा ग्रामीण जीवन है। जिसमें सामाजिक दूरी स्वयं बनी रहती है। बापु स्वयं कहते थे ''ग्रामीण जीवन ही समृद्ध जीवन है।'' गाँव की ओर लौटो। भारत की आत्मा गांवो में बसती है। इसे स्वच्छ, सुन्दर, समृद्ध जल–जीवन हरियाली युक्त बनाया जाय। आस–पास स्वच्छ रखे, बार–बार साबुन में हाथ धोए, साबधानी बरते, मार्क्स लगाये, सेनेटाइजर से स्प्रे करते रहे तो कोविड–19, से बचा जा सकता है।

प्रति शताब्दी 1820, 1920, 2020 में प्राकृतिक त्रासदी आती रही है। मानव का जब अतिक्रमण प्रकृति पर बढ़ता है तो प्रकृति जनसंख्या नियंत्रण, अपनी सफाई स्वयं करती है। जिसका प्रमाण कोविड–19, लॉकडाउन से पर्यावरण शुद्धता, कार्बनडाइआक्साइड में कमी, जलवायु परिवर्तन, वर्षा की निष्चितता, अतिवृष्ट्रि इसका प्रमाण है। जो काम मानव समय और पैसा खर्च करके भी नहीं कर सका। पृथ्वी दिवस मनाकर भी नही रोक सका। वह काम प्रकृति करौना लाकर कर दी और मानव को अपने अनुकूल चलने के लिए विवष बना दी। ऐसे में मानव प्रकृति के साथ सहभागिता बनाकर चलता है तो पर्यावरण प्रबन्धन एवं सुरक्षा में काफी मदद मिलेगी।

पर्यावरण वह आवरण है जिसमें जीव चारो ओर से घिरा होता है और भैतिक तथा जैविक कारक उसे प्रभावित करते रहते है। यह तीनों मंडल से मिलकर बना है। पृथ्वी का आवरण वन–वनस्पति है। यही उसका सुरक्षा कवच है। जो जल, जीवन, हरियाली, प्रदान करते है। पारिस्थितिकी संकट से पर्यावरण बिनन्ट होती है और मानव सहित समस्त प्राणी का जीवन संकट से घिर जाता है। ऐसे में वृक्ष की सुरक्षा, वृद्धि निष्चित समय पर कटाई, एक तिहाई वृक्ष की अनिवार्यता, परिपक्वता पर कटाई, कटे जगह पर पुनः रोपाई का संतुलन बनाकर

ही प्राकृतिक संकट से निजात पाया जा सकता है। बाढ़, सुखर, भूमि कटाव, भूमि क्षरण, ताप वृद्धि, ग्रीन हाउस प्रभाव, सुनामी लहरे, भूकम्प, रसायनिक वर्षा, महामारी कार्बन डाइआक्साइड में वृद्धि ओजोन में छिद्र, अल्ट्रा वायलेट किरण को धरती तक आने से फैल रहे चर्म रोग, हृदय रोग, श्वसन रोग, बढ़ रहे है। ताप वृद्धि से छोटे जीव जंतु नष्ट हो रहे है। मौसम परिवर्तन हो रहा है। फसल नष्ट हो रहे है और उपज घट रही है। कीट का प्रकोप बढ़ा है। उत्पादन घट रहा है। सागरीय जल स्तर बढ़ रही है। यानी पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ते ही समांजस्य बिगड़ेगा और त्रासदी आएगी। अतः मानव को पर्यावरण की सुरक्षा प्रदान करना अति आवष्यक है।

उद्देष्य :–

वर्तमान शोध–पत्र का मुख्य उद्देष्य उत्तरी बिहार के पर्यावरण की शुद्धता वनस्पति आवरण की सुरक्षा से जुड़े उपाय को जमीनी स्तर पर लागू कर अध्ययन विचार करना है।

आँकड़ो के स्त्रोत/शोध–विधि :–

इस अध्ययन, विष्लेषण के लिए प्राथमिक यानी सर्वेक्षण पर आधारित आंकड़े एवं द्वितीयक, प्रकाषित पुस्तक, सूचनाओं से प्राप्त आंकड़े उपयोग में लायी गयी है।

भागौलिक परिदृष्य/अध्ययन क्षेत्र :–

भारत के कुल भू–भाग का 20.64 प्रतिषत क्षेत्र वनाच्छाप्ति है। इसमें 12 प्रतिषत घने वन, 7.96 प्रतिषत खुलेवन, 0.15 प्रतिषत सुन्दरी वन और 0.53 मानव निर्मित वन है। जिसका वितरण काफी असमान है।

अध्ययन क्षेत्र उत्तर–पूर्वी भारत में स्थित मध्यवर्ती गंगा का उत्तरी भाग है। यह नेपाल, गंगा, पष्चिमी बंगाल और उत्तर प्रदेष से घिरा हुआ है। 53,847 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। बिहार की 63 प्रतिषत आबादी यहाँ निवास करती है। और घनत्व 1231 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत पांच प्रमंडल–सारण, तिरहुत, दरभंगा, कोषी, पूर्णिया अन्तर्गत 21 प्रषासनिक जिले और भागलपुर के नवगछिया अनुमण्डल आते हैं।

उत्तरी बिहार का पष्चिमी एवं पूवी क्षेत्रों में वनों का सर्वाधिक विस्तार है। कुल वन क्षेत्र 7 प्रतिषत है जिसका असमान वितरण हैं उत्तरी बिहार का 17.30 प्रतिषत क्षेत्र उर्सर, अयोग्य कृषि भूमि, चारागाह, बाढ़ क्षेत्र एवं बंजर क्षेत्र में विस्तृत है।

वर्तमान स्थिति

पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए जल, जीवन हरियाली कार्यक्रम सधन वृक्षारोपण को सार्वजनिक एवं निजी दोनों क्षेत्रों में सौपने की जरूरत है। जिलानुसार भूमि उपयोग तालिका–1 में अनुपयुक्त भूमि पर सधन वृक्षारोपण करके सफल बनाया जा सकता है।

ज्ंइसम छवण दृ 1

क्पेजतपबज˘पेम स्ंदक न्म पद छवतजी ठपींत ;2012.13द्ध

ॅणछवण	छंउम व िक्पेजतपबज	ज्वजंस ंतमं पद ीमबजंतमे	छवज ॅवूद ।तमं पद :	।तमं न्दकमत छवद. ।हंपदेज ;:द्ध	न्मत ंदक न्दबनस ज्ंइसम स्ंदक	ब्नददंस ंदक वजीमत विससवू पद ;:द्ध	ॅंजनमे ंदक ठंततपदह बसनकपदह	ब्नसजपअंजपवदइंतममद स्ंदक	थ्वतमेज
1	ॅतंद	262487	69ण60	11ण23	8ण82	6ण52	3ण56	0ण33	.
2	ॅपूंद	221310	77ण33	12ण01	3ण10	3ण96	2ण46	0ण14	.
3	ळवचंसहंदर	203373	71ण42	16ण22	4ण49	2ण74	4ण40	0ण73	.
4	डन्रींतिचनत	317251	65ण90	18ण25	8ण49	1ण68	5ण26	0ण42	.
5	म्ंबिंउचंतंद	424915	69ण08	14ण22	9ण50	1ण90	4ण41	0ण35	0ण05
6	ॅण्बिंउचंतंद	484254	50ण61	21ण05	4ण52	0ण62	3ण45	0ण81	18ण94
7	ॅपजंउंतीप	262166	66ण40	21ण80	4ण62	0ण874	6ण12	0ण31	.
8	टंपेंप	201449	60ण78	18ण53	4ण96	11ण04	6ण61	0ण36	.
9	क्तइींदहं	221950	59ण58	22ण71	13ण52	0ण54	4ण86	0ण41	.
10	डंकीनइंदप	350156	58ण48	24ण35	10ण50	0ण66	6ण65	0ण42	.
11	ॅउंजपचनत	191865	68ण17	22ण70	3ण84	1ण50	2ण63	0ण16	.
12	ठमहनेंतंप	191865	69ण70	12ण66	3ण94	9ण65	3ण83	0ण12	.
13	ॅीमवींत	81016	66ण29	19ण12	8ण65	3ण62	2ण13	0ण57	..
14	ॅींतें	195510	65ण77	16ण95	6ण82	6ण62	2ण63	1ण11	.
15	डंकीमचनतं	187719	70ण06	17ण17	6ण64	2ण20	3ण80	0ण17	.
16	ॅनचंनस	238419	60ण36	23ण32	4ण91	8ण55	2ण71	0ण35	.
17	च्नतदमं	322912	65ण10	13ण85	13ण92	3ण96	2ण74	0ण19	0ण04
18	झ्ंजपींत	293349	54ण78	17ण69	14ण81	7ण66	3ण90	0ण55	0ण61
19	।तंतपं	271712	62ण49	19ण82	11ण82	0ण31	5ण02	0ण13	0ण40
20	झ्पींदहंदर	189080	68ण18	19ण82	11ण83	0ण31	5ण02	0ण13	0ण40
21	झ्ीहंतपं	149342	63ण72	12ण02	13ण46	9ण16	1ण47	0ण17	.
22	छंनहंबीीपंॅनइ क्पअपेपवद	8698	58ण20	18ण39	11ण82	8ण69	2ण62	0ण28	.
		38490	65ण32	17ण40	8ण82	5ण30	2ण08	0ण06	1ण02

स्रोत– सांख्यिकी विभाग, पटना

प्रमुख समस्या :–

वन बहुउपयोगी संसाधन है। जो कीमती लकड़ी फल, औषधि, लाह, कागज आदि अनेक वस्तुएँ मानव समाज को प्रदान करती है और पर्यावरण को स्वच्छ भी रखती है। जिसका स्थानीय महत्व सर्वाधिक होता है। वनों की अंधाधुन कटाई से अनेक समस्या उत्पन्न हुई है। भूमि क्षरण, मौसम परिवर्तन, वर्षा की अनिष्चतता, अनियमितता, मानसुन का अभाव वनस्पति का विनष्ट होना, वन जीव–जन्तु का विलुप्त होना प्राकृतिक विपदा, सुखार, बाढ़, आंधी तूफान, समुद्री चक्रवात, कीट प्रकोप, उत्पादन में कमी, तेजाबी वर्षा भूमि जलस्तर में गिरावट इत्यादि अनेक समस्या आयी है जो फसल के लिए नुकसानदायक है।

इन सारी समस्या को रोकने का एकमात्र उपाय है सर्वाधिक वृक्ष लगाओं। प्रकृति को हरा–भरा बनाओं। जल जीवन हरियाली कार्यक्रम से बंगर क्षेत्र को हरा–भरा बनाओ। कोसी के दोआब क्षेत्र खादर भूमि में वृक्ष कम उगते है और जल जमाब से सुख जाते है। दरभंगा से पूर्व का क्षेत्र आर्द्र एवं पष्चिम का क्षेत्र उष्ण–शुष्क है। इन अयोग्य भूमि पर वृक्षारोपण कर हरित प्रदेष बनाने की वर्तमान जरूरत है।

समस्या और समाधान :–

उत्तरी बिहार सघन जनंसख्या का क्षेत्र है। यहाँ आवासीय भूमि का उपयोग बढ़ रहा है और कृषि भूमि घट रहे है। बढ़ती आबादी, उत्पादन में वृद्धि के लिए गहन खेती, रसायनिक खाद कीटनाषी के प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति घट रही है। कल–कारखाने, वाहन के प्रदूषित वायु से अम्लीय वर्षा में वृद्धि हुई है। जो फसल के लिए नुकसान दायक है। विभिन्न प्रकार के स्प्रे यंत्रों, रेफ्रिजिरेटरो वातानुकूल संत्रंयो इत्यादि के उपयोग से सी0एफ0सी0एस0 गैस निकलता है। जिसमें क्लोरीन, फ्लोरीन और कार्बन के तत्व होते है जो वायुमण्डल में पहुंचकर ओजोन परत को तोड़ते रहते हैं। इससे पर्यावरण क्षतिग्रस्त और नष्ट होता रहता है। जिससे घातक अलट्रा वायलेट किरण धरती तक पहुँचकर त्वचाकैंसर, चर्मरोग, हृदय रोग, उपज में कमी और छोटे जीव–जन्तु को नष्ट कर देते है। चित्र–2 में इसे दिखाया गया है।

आज मानवीय सुख–सुविधा ने प्रदूषण में वृद्धि की है। 1860–1960 के बीच वायुमण्डल में 14 प्रतिषत कार्बन डाईआसाइड की मात्रा बढ़ा दी है। वन–वनस्पति और हरियाली कार्बन ड्राइआक्साइड को खोखते है और आक्सीजन छोड़ते हैं। इससे पर्यावरण का शुद्धिकरण होता रहता है। मानवीय अविवेक ने हरियाली नष्ट कर पर्यावरण संकट को जन्म दिया है। पृथ्वी गैसो का चेम्बर बन गया। हरित गृह प्रभाव नष्ट हो गये। जिसे पुनः जीवित करने की जरूरत है।

विष्व में 6 जून को पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। लेकिन वन संरक्षण कार्बन उर्त्सजन पर ग्रास रूट कार्य नहीं करते है। कोविड–19 और लॉकडाउन के प्रभाव से हुए जल वायु परिवर्तन को देखते हुए इसे वर्ष में एक बार सम्पूर्ण विष्व में पूर्ण लॉकडाउन 6 जून के रूप में मनाना चाहिए।

हमारे देष में छठी पंचवर्षीय योजना वनों के क्षेत्र विस्तार के लिए बनी और 20 सूत्री कार्यक्रम में वानिकी को शामिल किया गया। (1) बंजर भूमि पर मिश्रित वन लगाना, (2) नष्ट वृक्ष की जगह पुनः वृक्ष रोपण (3) हरित सुरक्षा पेटी बनाना।

सरकार ने 73 ''वे'' संविधान संषोधन के अन्तर्गत त्रि–स्तरीय पंचायती राज अधिनियम के माध्यम से ग्राम पंचायत समिति, जिला परिषद के साथ प्रमंडल को वन विभागान्तर्गत सम्मिलित कर संयुक्त कार्यक्रम बनाया है। इस विभाग का सहयोग, देख–रेख से सरकार ने 2020 तक 33 प्रतिषत भाग वनयुक्त करने का लक्ष्य रखा है।

स्वतंत्रता के बाद प्रथम बार पंचायती राज को मनरेगा के तहत वृक्ष लगाने, देखभाल, पोषण, निगरानी, अधिकार दिया गया है। जिसका परिणाम सार्थक है। इसे ग्रामीण व शहरी दोनो क्षेत्रों में अधिक प्रोत्साहित करने की जरूरत है। तभी जाकर उत्तरी बिहार का दो प्रदूषित शहर मुजफ्फरपुर, और दरभंगा की रक्षा की जा सकती है।

इस योजना के तहत उत्तर बिहार के 21 जिले के विभिन्न पंचायतो ने अपने ऊर्सर, कृषि योग्य बेकार बंजरभूमि, सड़क, बाँध, पोखर किनारे फलदार और कीमती लकड़ी के वृक्ष लगाये है। इसका पोषण, संरक्षण, देखभाल स्वयं कर रहे हैं। आज सारण में (19.23 प्रतिषत), सीवान (9.66 प्रतिषत), गोपालगंज (12.36 प्रतिषत), मुजफ्फरपुर (15.85 प्रतिषत), पूर्वी चंपारण (16.16 प्रतिषत) पष्चिमी चंपारण (9.4 प्रतिषत), सीतामढ़ी (11.8 प्रतिषत), वैषाली (22.47 प्रतिषत), दरभंगा (19.31 प्रतिषत), मधुबनी (18.23 प्रतिषत), समस्तीपुर (11.67 प्रतिषत), बेगुसराय (17.54 प्रतिषत), षिवहर (14.97 प्रतिषत), सहरसा (17.18 प्रतिषत), मधेपुरा (12.81 प्रतिषत), सुपौल (16.52 प्रतिषत), पूर्णिया (20.81 प्रतिषत), कटिहार (26.92 प्रतिषत) अररिया (17.29 प्रतिषत), किषनगंज (17.29 प्रतिषत), खगड़िया (24.26 प्रतिषत) और नवगछिया अनुमण्डल में (23.41 प्रतिषत) भाग पर वृक्ष लगाये गये है। इसके काफी अधिक सार्थक लाभ एवं परिणाम मिल रहे है।

फिर भी इसे बचाने के लिए अनवरत निम्न प्रयास होना चाहिए :–

1. पांच वर्ष तक वृक्ष सुरक्षा के लिए 'वृक्षमित्र बहाल हो जो उसे सिचाई करें। पशुओं से बचाने के लिए घेरा लगाए एवं मानव से सुरक्षा प्रदान करें।
2. इसके लिए सार्थक प्रबन्धन, सिचाई साधन का विस्तार जरूरी है।
3. सार्वजनिक व निजी क्षेत्र में वृक्षारोपण के लिए मुफ्त पेड़ एवं पुरस्तकार स्वरूप धनराषि देने की योजना हो। वृक्ष हमारा–सम्पत्ति तुम्हारा। 25 वर्ष के बाद वृक्ष काटो और सरकार से वृक्षपेंसन पाते रहो।
4. सरकारी के साथ–साथ निजी क्षेत्र में इसे अधिक लाभप्रद बनाना चाहिए। जिससे सीमान्त किसान, जमीनदार किसान सभी योजना को मजबूती देंगे और सर्वाधिक वृक्ष लगाएगें।
5. प्रत्येक बच्चे के जन्म के साथ पांच वृक्ष लगाने वाले परिवार को प्रोत्साहन राषि सरकार की ओर से मिलना चाहिए।
6. किसान सिंचित क्षेत्र का विस्तार कर फसल चक्र अपनाये। इससे भू–क्षण, भू–जल स्तर उच्च होगा। बाढ़ अनियमित मानसून, मौसम परिवर्तन, सुखार, प्राकृतिक प्रकोप घटेगा।
7. जैविक कृषि एवं हरित कृषि को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। आज कोविड–19, के समय पर सभी क्षेत्र में गिरावट आयी। परंतु कृषि क्षेत्र अछूता रहा। इसका मुख्य कारण मेहनत और दूरी बिना लॉकडाउन खेती है जरूरी।
8. आज पर्यावरण षिक्षा का प्रसार जरूरी है। वृक्ष हमारे सुरक्षा कवच है। जो हमें परिस्थितिकी संकट से बचाते है। जल–जीवन हरियाली को बचाकर ही मानव सहित सभी जीवो की सुरक्षा की जा सकती है।
9. बिहार सरकार के मुखिया नीतिष जी की पहल इस दिषा में सार्थक सामाजिक जागृति बनायी है।

10. कोविड–19, की तरह जब तक दबाई नही ंतब तक ढ़िलाई नही। जब तक वृक्ष एक–तिहाई नही ंतब तक प्रयास में कमी नहीं होनी चाहिए।

11. आज कोविड–19 से बचने के लिए दो गज दूरी मास्र्क जरूरी मानते है। ऐसा ही प्रयास अल्टावायलेट किरण से बचने के लिए होना चाहिए।

निष्कर्ष :–

मानव प्रकृति का सम्बन्ध सदियों पुराना है। जब मानव की जनसंख्या अति बढ़ती है तो शताब्दी होते ही प्रकृति उसे स्वयं कम करती है। मानव भी प्रकृति का एक जीव है। जिसके करनी का दुष्यपरिणाम वह स्वयं भोगता है। अतः जीवन बचाने के लिए स्वच्छ, प्रदूषण रहित पर्यावरण ही मानव सहित सभी जीवों के जीवन विकास में ही संभव है। जल–जीवन हरियाली है करना सुखद भविष्य हो अपना।

शोध संदर्भ :–

1. ीउंक ᵮ 1965 दृ ठपींत । चैलेपबंस म्बवदवउपबंस ंदक त्महपवदंस ळमवहतंचील. त्ंदबीप

2ण ब्मदबने वि्प्दकपं 2011 ठपींतॅ मतपमे दृ प्प्‍ थ्पदंस च्नइसपबंजपवद ज्ंइसमेण

3ण त्ंवए ठण्च्ण ंदक त्ण्ठणॅ पदही ;1995द्ध ठपींत झ्ं ठींनहंसपबॅ ूतनचए ठेंनदकींतं च्नइसपबंजपवदए च्ंजदं

4ण के0डी0 सवसेनाः– इन्मारमेन्ट प्लानिंग पॉलिसी एण्ड प्रोग्राम इन इंडिया, षिप्रा पबिल्केषन हाउस–दिल्ली 1991

5. वाषिकी रिपोर्ट :– 1999–2012, 2020 वन एवं पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली 2011–20